Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

झारखण्ड के बिरहोर जनजाति की आर्थिक स्थिति : एक अध्ययन

अलबिना कच्छप
शोध छात्रा
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद
डॉ उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद

सारांश:
झारखंड राज्य भारत में जनजातीय समुदायों का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली के लिए जाना जाता है। वास्तव में, झारखंड का गठन ही जनजातीय समाज की अस्मिता, विशिष्ट पहचान और अधिकारों की रक्षा हेतु किया गया था। राज्य की जनसंख्या में लगभग 32 प्रकार की जनजातियाँ शामिल हैं, जो कुल जनसंख्या का लगभग 26.2 प्रतिशत (कुछ अनुमानों के अनुसार 30 प्रतिशत से अधिक) हिस्सा बनाती हैं। इनमें आठ आदिम जनजातियाँ प्रमुख हैं, जिनमें *बिरहोर जनजाति* का विशेष स्थान है। बिरहोर जनजाति मुख्य रूप से रांची, हजारीबाग, बोकारो, गिरिडीह और कोडरमा जिलों में निवास करती है। यह समुदाय सामाजिक और आर्थिक दोनों स्तरों पर अत्यंत पिछड़ा हुआ है। उनकी आजीविका पारंपरिक रूप से वनों पर आधारित रही है, जिसमें वनोपज संग्रह, शिकार, रस्सी बनाना और छोटी-मोटी बुनाई प्रमुख हैं। हालांकि, वन संसाधनों में हो रही कमी और बदलती आर्थिक परिस्थितियों ने उनके जीविकोपार्जन के तरीकों को गहराई से प्रभावित किया है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य बिरहोर समुदाय की आय के स्रोतों, आर्थिक चुनौतियों और सरकारी योजनाओं के प्रभाव का आकलन करना है। पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बिरहोरों की औसत आय अत्यंत कम है, जिससे वे शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित रह जाते हैं। यद्यपि मुफ्त राशन वितरण, प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी सरकारी योजनाएँ कुछ राहत प्रदान करती हैं, लेकिन इनके क्रियान्वयन में कई कमियाँ बनी हुई हैं। बिरहोर जनजाति की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए दीर्घकालिक और समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। इसमें कौशल विकास, स्थानीय संसाधनों का स्थायी और प्रभावी उपयोग, तथा बाजारों तक पहुँच सुनिश्चित करना प्रमुख उपाय हो सकते हैं। इसके साथ ही, जनजातीय समुदाय की भागीदारी के साथ नीतियों को क्रियान्वित करना आवश्यक है, ताकि उनकी पारंपरिक आजीविका को आधुनिक आर्थिक व्यवस्थाओं से जोड़ा जा सके और वे सम्मानजनक जीवन यापन कर सकें।

कुंजी शब्द : आदिम जनजाति, बिरहोर, जनजातीय आर्थिकी, झारखण्ड

परिचय :
झारखंड में कुल 32 जनजातियां पाई जाती हैं, जिनकी जनसंख्या लगभग 86,45,042 है, जो राज्य की कुल जनसंख्या का 26.2% है **(जनगणना, 2011)**[1]। इन जनजातियों में 8 आदिम जनजातियां भी शामिल हैं, जिनकी जनसंख्या 1,92,425 है, जो कुल जनजातीय जनसंख्या का 0.72% है। इन आदिम जनजातियों में बिरहोर एक प्रमुख जनजाति समुदाय है । बिरहोर का अर्थ होता है "जंगल के लोग" – जहाँ 'बिर' का मतलब जंगल और 'होर' का मतलब आदमी होता है। बिरहोर जनजाति के लोग आमतौर पर छोटे कद के होते हैं, इनके सिर लंबे, बाल घुंघराले और नाक चौड़ी होती है। ये मानववंशीय दृष्टि से प्रोटो-ऑस्ट्रलॉइड नस्लीय समूह से संबंधित माने जाते हैं **(आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,रायपूर, 2020)**[2]। भारत की जनगणना 2011 के अनुसार, बिरहोर जनजाति की कुल जनसंख्या मात्र 17,241 है, जो भारत की कुल जनजातीय आबादी का केवल 0.01 प्रतिशत है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि भारत में बिरहोर जनजाति की जनसंख्या अत्यंत दुर्लभ और सीमित है। झारखंड में बिरहोर जनजाति की सर्वाधिक संख्या पाई जाती है, जो इस जनजाति की कुल आबादी का लगभग 62.21 प्रतिशत है। यह तथ्य इस बात की ओर संकेत करता है कि बिरहोर जनजाति की उत्पत्ति का मूल स्थान झारखंड ही है **(प्रेमी, 2014)**[3]।

भारत में आदिम जनजाति समुदायों की जीवनशैली में समय के साथ कई बदलाव आए हैं, सबसे बड़ी चिंता है उनकी दयनीय आर्थिक स्थिति । झारखण्ड का बिरहोर जनजाति समुदाय इससे अछुता नहीं है, पारंपरिक रूप से वनों पर निर्भर यह समुदाय काफी समृद्ध था, बुनियादी संसाधनों एवं आजीविका का कोई संकट नहीं था। परंतु शहरीकरण, वनों की कटाई और औद्योगीकरण के कारण इनकी परम्परागत आजीविका के स्रोत समाप्त हो गए हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं की पहुँच अब भी सीमित है **(प्रकाश, 2022)**[4]। अधिकांश आदिम जनजातियाँ आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही हैं। सरकारी योजनाएँ जैसे

वनाधिकार अधिनियम, आवास योजना और राशन वितरण मौजूद तो हैं, पर उनका लाभ सही रूप में इन समुदायों तक नहीं पहुँच पाता। संसाधनों की कमी, सामाजिक उपेक्षा और प्रशासनिक उदासीनता के कारण इनकी आर्थिक स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है, जिससे वे एक तरफ आज भी मुख्यधारा से कटे हुए हैं वहीँ दूसरी तरफ अपनी सांस्कृतिक अस्तित्व को खोते जा रहें हैं **(लकड़ा एवं कुमार, 2017)[5]।**

उपरोक्त पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए, यह लेख पूर्ववर्ती अध्ययनों के गहन विश्लेषण के आधार पर झारखंड के बिरहोर जनजाति समुदाय की आर्थिक स्थिति का व्यापक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। यह लेख उन प्रमुख कारकों की पहचान करने का प्रयास करता है, जिनके कारण इस समुदाय की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। साथ ही, यह शोध पत्र बिरहोर जनजाति की वर्तमान आर्थिक चुनौतियों को रेखांकित करते हुए, उनकी आजीविका और जीवन स्तर में सुधार हेतु व्यवहारिक एवं नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत करता है, जिससे उनके सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में ठोस पहल की जा सके।

- **बिरहोर जनजाति की आर्थिक स्थिति:**

झारखण्ड में बिरहोर समुदाय कमोबेश सभी जिलों में वितरित हैं यद्यपि राँची, हजारीबाग, गुमला, गिरिडीह, चतरा, सिंहभूम, पलामू इत्यादि कुछ जिलों में इनका सकेंद्रण अधिक है। **सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर** यह जाति तीन भागों में विभाजित है -उथलू बिरहोर, जांघी बिरहोर एवं बसालू बिरहोर। यह जनजाति अपने घूमन्तु जीवन के लिए भी जाना जाता है। जंगल न सिर्फ इनके आश्रय स्थल रहें हैं बल्कि जीविका का मुख्य साधन भी । **बिरहोर जनजाति की पारंपरिक अर्थव्यवस्था** मुख्य रूप से खानाबदोश जीवनशैली, वनोपज संग्रह और शिकार पर आधारित रही है । **बिरहोर जनजाति की पारंपरिक अर्थव्यवस्था** मुख्य रूप से खानाबदोश जीवनशैली, वनोपज संग्रह और शिकार पर आधारित रही है, विशेष रूप से बंदरों के शिकार पर। इसके अलावा वे खरगोश और तीतर (एक छोटी पक्षी) को फँसाते हैं तथा जंगलों से शहद इकट्ठा करके बेचते हैं। वे एक विशेष प्रकार की बेल के रेशों से रस्सियाँ बनाते हैं, जिन्हें आस-पास के कृषक समाज के बाज़ारों में बेचते हैं। हालाँकि हाल के वर्षों में बदलती परिस्थितियों और सरकारी नीतियों के प्रभाव स्वरूप कुछ बिरहोर अब स्थायी कृषि जीवनशैली को अपनाने लगे हैं, फिर भी उनकी पारंपरिक खानाबदोश प्रवृत्ति अब भी समाप्त नहीं हुई है **(आदिम जाति अनुसन्धान संस्थान, रायपुर, 2020)[6]**।

लगभग 30-40 वर्ष पूर्व तक झारखण्ड की आदिम जनजातियों में शामिल *बिरहोर समुदाय* सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से तुलनात्मक रूप से संतुलित जीवन जी रहा था। उनका जीवन प्रकृति के निकट, जंगलों पर आधारित और पारंपरिक आजीविका पर केंद्रित था। किंतु समय के साथ, विशेष रूप से हाल के दशकों में, ऐसे अनेक सामाजिक, आर्थिक और नीतिगत बदलाव हुए हैं, जिनका प्रतिकूल प्रभाव इस समुदाय के जीवन, संस्कृति और अस्तित्व पर पड़ा है। आधुनिकता के प्रसार और द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं (जैसे उद्योग, खनन आदि) पर केंद्रित अर्थव्यवस्था के उद्भव ने इनके पारंपरिक जीवन ढांचे को तोड़ दिया। मुख्यधारा समाज में उन्हें जबरन शामिल करने की बिना सोच-समझ की गई नीतियों ने उनके सांस्कृतिक ताने-बाने को क्षतिग्रस्त किया। वन एवं पर्यावरण संरक्षण के नाम पर इन समुदायों को उनके प्राकृतिक आवास से बेदखल कर दिया गया, जबकि उन्हीं क्षेत्रों को बाद में औद्योगिक उपयोग और खनन के लिए खोल दिया गया। विकास के नाम पर जिस तरह से *जल, जंगल और जमीन* का दोहन किया गया, उसने न केवल बिरहोरों की पारंपरिक जीवनशैली को संकट में डाला, बल्कि उनके सांस्कृतिक अस्तित्व पर भी गहरा आघात किया। बाह्य सांस्कृतिक प्रभावों ने भी उनके पारंपरिक मूल्यों और पहचान को कमजोर किया है **(कुमार,2017 a)[7]**। हाल के वर्षों की आर्थिक नीतियाँ इन समुदायों के लिए लगभग उदासीन साबित हुई हैं। वन्य जीव और जंगलों की रक्षा के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद न तो जंगल सुरक्षित रहे हैं और न ही वहाँ के जीव-जंतु। आज 'विकास' के नए प्रतिमानों ने जैसे चिड़ियाघरों में वन्य जीवों को सीमित कर दिया है, उसी तरह झारखण्ड की आदिम जनजातीय संस्कृतियों को भी केवल "संरक्षण की वस्तु" बना दिया गया है – जीवित संस्कृति के रूप में नहीं, बल्कि संग्रहालयों और रिपोर्टों तक सीमित **(कुमार, 2017 b)[8]**।

- **झारखंड के बिरहोर आदिम जनजाति की प्रमुख आर्थिक समस्याएं :**

परम्परागत आर्थिक व्यवस्था का उद्योग आधारित अर्थव्यवस्था से प्रतिस्थापन से जन्मी परिस्थितियों में झारखण्ड के आदिवासी समूह की आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है **(बंद्योपाध्याय, 2015)[9]**। बिरहोर समुदाय झारखंड के अत्यंत निर्धन आदिवासी समूहों में शामिल है। यह जनजाति अब भी मुख्य रूप से जंगलों और प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित जीवन जीती है। शिक्षा, रोजगार और बुनियादी सेवाओं की भारी कमी के कारण यह समुदाय गहरी गरीबी में जीवन व्यतीत कर रहा है। इनके पास न तो स्थायी आमदनी के स्रोत हैं और न ही कृषि योग्य भूमि। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण वे अक्सर दैनिक श्रमिक के रूप में अत्यंत न्यून मजदूरी पर काम करने को विवश होते हैं। सरकारी योजनाओं तक इनकी पहुँच सीमित है, जिससे गरीबी की स्थिति और जटिल हो जाती है **(नागवंशी एवं कुमार,2025)[10]**। इसी प्रकार बिरहोर जनजाति में बेरोजगारी एक गंभीर समस्या है। पारंपरिक आजीविका जैसे लकड़ी काटना, जड़ी-बूटी इकट्ठा करना, रस्सी बनाना आदि अब घटते जंगलों और सरकारी प्रतिबंधों के कारण संकट में हैं। नई आर्थिक व्यवस्था में इनके पास आवश्यक कौशल या शिक्षा नहीं होने के कारण ये किसी भी संगठित या अर्द्ध-संगठित क्षेत्र में रोजगार प्राप्त नहीं

कर पाते। युवाओं में तकनीकी शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण का पूर्णतः अभाव है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे रोजगार गारंटी कार्यक्रम या कौशल विकास योजनाओं की जानकारी और पहुँच दोनों ही इनके बीच नगण्य है। वहीँ विकास परियोजनाओं, खनन, औद्योगीकरण और वन संरक्षण के नाम पर बिरहोर समुदाय को उनके पारंपरिक आवास क्षेत्रों से विस्थापित कर दिया गया है। इन्हें उचित पुनर्वास या वैकल्पिक आवास नहीं मिल पाया, जिससे यह समुदाय अस्थायी झोपड़ियों या जंगल के किनारे झुग्गियों में रहने को मजबूर हो गया है। बेघरी की यह स्थिति न केवल इनके सामाजिक ताने-बाने को तोड़ती है, बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, और सुरक्षा जैसे मूल अधिकारों तक इनकी पहुँच को भी बाधित करती है। कई बार इन्हें बार-बार विस्थापित होना पड़ता है, जिससे इनकी जीवनशैली अस्थिर हो गई है **(कुमार एवं अन्य, 2019)**[11]।

भोजन की असुरक्षा बिरहोर समुदाय के लिए एक बड़ी चुनौती है। जंगलों से मिलने वाला खाद्य संसाधन अब पहले जैसा उपलब्ध नहीं है, और खेती करने के लिए न तो इनके पास जमीन है और न ही संसाधन। सरकारी सार्वजनिक वितरण प्रणाली की पहुंच सीमित है और भ्रष्टाचार या प्रशासनिक लापरवाही के कारण बिरहोरों को नियमित रूप से राशन नहीं मिल पाता। गरीबी, बेरोजगारी और बेघरी के कारण इनकी खाद्य उपलब्धता और पोषण स्तर अत्यंत निम्न है, जिससे बच्चों और महिलाओं में कुपोषण की दर बहुत अधिक है। बिरहोर जनजाति की पारंपरिक आजीविका जंगल पर आधारित थी। इसी प्रकार आजीविका संकट एक प्रमुख आर्थिक समस्या है, ये लोग रस्सियाँ बनाना, शिकार करना, जड़ी-बूटी इकट्ठा करना, और वन्य उपज को बेचकर जीवन यापन करते थे। परंतु वन अधिनियमों, खनन और औद्योगीकरण ने इनकी आजीविका को छीन लिया है। अब न तो जंगल खुले हैं और न ही संसाधन। परिणामस्वरूप, ये लोग आर्थिक दृष्टि से पूरी तरह असुरक्षित हो गए हैं। पारंपरिक ज्ञान और कौशल बेकार हो गया है क्योंकि आधुनिक आर्थिक व्यवस्था में इसकी कोई जगह नहीं बची है **(कुमार एवं कुमार,2017)**[12]। देश और राज्य में विकास के नए मॉडल जैसे औद्योगीकरण, शहरीकरण, और खनन आधारित अर्थव्यवस्था ने आदिवासी समुदायों, विशेषकर बिरहोरों को पूरी तरह नज़रअंदाज़ किया है। इन नीतियों में न तो उनके हितों की रक्षा की गई और न ही उन्हें सक्रिय रूप से शामिल किया गया। जबरन भूमि अधिग्रहण, विस्थापन, और बिना पुनर्वास के निष्कासन के कारण यह समुदाय विकास की मुख्यधारा से और अधिक पीछे चला गया है। आधुनिक विकास की योजनाएँ इनकी आवश्यकताओं और जीवनशैली से मेल नहीं खातीं, जिससे इन्हें और अधिक सामाजिक-आर्थिक हाशिए पर धकेला गया है **(कृति,2017)**[13]।

बिरहोर समुदाय के विस्थापन के बाद उनके पुनर्वास के लिए कोई ठोस और व्यावहारिक नीति नहीं बनाई गई। जो नीतियाँ बनी भी, वे क्रियान्वयन में विफल रहीं। पुनर्वास के नाम पर उन्हें अक्सर ऐसे स्थानों पर बसाया जाता है जहाँ न तो रोजगार की सुविधा है, न पानी-बिजली जैसी बुनियादी सेवाएं और न ही सामाजिक सुरक्षा। पुनर्वास की प्रक्रिया में उनकी पारंपरिक संस्कृति, आजीविका और सामाजिक संरचना की पूरी तरह अनदेखी की जाती है। इससे न केवल उनका आर्थिक बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी बड़ा नुकसान हुआ है **(सिंह, 2010)**[14]। इसी प्रकार शैक्षिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से बिरहोर समुदाय आज भी समाज की मुख्यधारा से कोसों दूर है। इनका सामाजिक पिछड़ापन इस कदर है कि ये अपनी जरूरतें और अधिकारों की मांग भी नहीं उठा पाते। समाज में इन्हें हीन दृष्टि से देखा जाता है, और इन्हें निर्णय प्रक्रिया से दूर रखा जाता है। सामाजिक भेदभाव, अशिक्षा, और प्रशासनिक उदासीनता ने इन्हें पूरी तरह से हाशिए पर ला दिया है। सरकार की योजनाओं का लाभ भी इन तक नहीं पहुँच पाता, जिससे यह पिछड़ापन और गहरा होता चला जाता है। बिरहोर जनजाति की स्वास्थ्य स्थिति बेहद चिंताजनक है। उचित स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता, अशुद्ध पेयजल, अपर्याप्त पोषण, और पारंपरिक चिकित्सा पद्धति पर निर्भरता के कारण इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर है। गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों में कुपोषण और संक्रमणजन्य बीमारियों की दर अत्यधिक है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी, भाषा संबंधी अवरोध और जागरूकता की कमी भी इन्हें स्वास्थ्य सेवाओं से दूर रखती है। स्वास्थ्य और पोषण की इस उपेक्षा का प्रभाव इनकी जीवन प्रत्याशा और संपूर्ण जीवन स्तर पर पड़ता है **(भारती एवं झा, 2019)**[15]।

- **बिरहोर जनजाति समुदाय के आर्थिक सुरक्षा हेतु सुझाव:**

झारखण्ड की जनजातीय संस्कृति एवं अलग पहचान यहाँ रहने वाली आदिम जातियों से ही परिलक्षित होती है, यह किसी त्रासदी से कम नहीं है कि मानव जाति का एक समूह जो कभी समृद्ध एवं खुशहाल जीवन व्यतीत कर रहा था उन्हें तथाकथित रूप से विकसित बनाने एवं मुख्यधारा समाज से जोड़ने की कोशिशों ने उन्हें उनके अस्तित्व के साथ ही संकट उत्पन्न कर दिया है । ऐसे में यह हम सब की जिम्मेवारी है कि इन जनजातीय समूहों की उत्तरजीविता को सुनिश्चित करें । इसके लिए निम्न सुझावों पर अमल करना आवश्यक है -

1. बिरहोर जैसे आदिम जनजातीय समुदायों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के लिए सबसे पहली जरूरत यह है कि सरकारी हस्तक्षेप न केवल योजनाओं तक सीमित हो, बल्कि उसका प्रभाव ज़मीनी स्तर पर दिखे। इसके लिए यह आवश्यक है कि पंचायत और ग्राम स्तर पर जागरूक और जवाबदेह तंत्र विकसित किया जाए, जो समुदाय तक सही जानकारी और लाभ पहुंचाए। प्रशासन

को इन क्षेत्रों में नियमित निगरानी रखनी चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी बिरहोर परिवार योजनाओं से वंचित न रहे। साथ ही, निर्णय प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना भी जरूरी है।

2. बिरहोर समुदाय के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई कल्याणकारी योजनाएं जैसे - राशन कार्ड, स्वास्थ्य बीमा, पेंशन, रोजगार गारंटी, बच्चों के लिए छात्रवृत्ति आदि अत्यंत आवश्यक हैं। इन योजनाओं को समुदाय की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को ध्यान में रखकर ढाला जाना चाहिए। केवल योजनाएं बनाना पर्याप्त नहीं, बल्कि उनका प्रभावी क्रियान्वयन भी जरूरी है। इसके लिए क्षेत्रीय स्वयंसेवी संस्थाएं और समुदाय के भीतर से प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को शामिल किया जाना चाहिए। साथ ही, समय-समय पर ऑडिट और मूल्यांकन भी आवश्यक है।
3. बिरहोर जनजाति का पारंपरिक जीवन जंगलों से जुड़ा रहा है। इसलिए उनके पुनरुत्थान के लिए उन्हें वन आधारित लघु और मध्यम उद्योगों से जोड़ा जाना चाहिए – जैसे बाँस और लकड़ी से हस्तशिल्प, जड़ी-बूटी आधारित उत्पाद, शहद उत्पादन, और प्राकृतिक रस्सी निर्माण। इसके लिए प्रशिक्षण, बाजार उपलब्धता, वित्तीय सहायता और विपणन रणनीति की आवश्यकता है। सरकार और सहकारी संस्थाएं मिलकर ऐसे मॉडल तैयार कर सकती हैं जो आत्मनिर्भरता और स्थायी आजीविका प्रदान करें। यह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण करेगा, बल्कि पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण भी करेगा।
4. आज विकास का मॉडल अक्सर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और विस्थापन पर आधारित है, जिससे आदिवासी समुदायों का विनाश हो रहा है। आवश्यक है कि विकास के वैकल्पिक, समावेशी और सतत (sustainable) मॉडल पर ध्यान दिया जाए, जो प्रकृति और मानव समुदायों के बीच संतुलन बनाए रखे। छोटे पैमाने पर जैविक खेती, पारिस्थितिकी आधारित पर्यटन, और सामुदायिक वन प्रबंधन जैसे मॉडल बिरहोर जैसे समुदायों को भी लाभ पहुंचा सकते हैं। नीति-निर्माताओं को विकास की परिभाषा को व्यापक और मानवीय बनाना होगा।
5. बिरहोर समुदाय की शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति अत्यंत दयनीय है। इनके लिए विशेष आवासीय विद्यालय, आदिवासी भाषा में प्रारंभिक शिक्षा, और पोषण युक्त मिड-डे मील जैसे कार्यक्रम अनिवार्य हैं। स्वास्थ्य के लिए मोबाइल क्लिनिक, आदिवासी स्वास्थ्य कार्यकर्ता, मातृ-शिशु देखभाल केंद्र और नियमित स्वास्थ्य शिविर जरूरी हैं। साथ ही, स्वच्छ जल, शौचालय, बिजली और सड़क जैसी बुनियादी सुविधाओं का विकास भी प्राथमिकता में होना चाहिए। यदि ये बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित की जाती हैं, तो इनके जीवन में ठोस सुधार संभव है।
6. बिरहोर समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए विशेष प्रोत्साहन नीतियाँ बनानी होंगी। जैसे – उनके बच्चों को मुफ्त शिक्षा, छात्रवृत्ति, प्रतियोगी परीक्षाओं में विशेष आरक्षण, युवाओं को स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग, और महिला समूहों को स्वरोजगार हेतु वित्तीय सहायता। इसके अलावा, पारंपरिक कारीगरों और कलाकारों को मान्यता और बाजार तक पहुँच देने की जरूरत है। यह जरूरी है कि प्रोत्साहन केवल आर्थिक ही न हो, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक आत्मसम्मान को बढ़ाने वाला भी हो। सरकार को "बिरहोर विशेष प्रोत्साहन पैकेज" की दिशा में सोचना चाहिए।
7. बिरहोर जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा, परंपरा, रीति-रिवाज, गीत-संगीत और जीवनशैली है, जो आज विलुप्ति की कगार पर है। इस संस्कृति का संरक्षण न केवल उनके आत्मसम्मान के लिए, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विविधता के लिए भी जरूरी है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर सांस्कृतिक मेले, पारंपरिक कला व शिल्प केंद्र, भाषा संरक्षण अभियान और दस्तावेजीकरण आवश्यक है। विद्यालयों और प्रशिक्षण केंद्रों में आदिवासी संस्कृति को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। सांस्कृतिक संरक्षण के लिए समुदाय की भागीदारी सबसे अहम है।
8. बिरहोर जनजाति को उनके पारंपरिक निवास स्थलों से बार-बार विस्थापित किया गया है। अब आवश्यक है कि उन्हें स्थायी, सुरक्षित और सुविधायुक्त आवास प्रदान किया जाए जो उनके सामाजिक ढांचे और पर्यावरण के अनुकूल हो। भूमि अधिकार सुनिश्चित किए जाएं ताकि वे भविष्य में पुनः विस्थापन से सुरक्षित रह सकें। साथ ही, उनके आवास के आसपास शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल और आजीविका की व्यवस्था की जाए। ग्राम स्तर पर सामुदायिक नियोजन और निर्णय प्रक्रिया में बिरहोरों की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करना, इस दिशा में ठोस कदम होगा।

- **निष्कर्ष :**

किसी भी समुदाय की आर्थिक स्थिति का आकलन उसकी आय, पेशा, जीवन-शैली, संसाधनों तक पहुँच और उनकी आर्थिक स्वायत्तता से किया जाता है। झारखण्ड का बिरहोर समुदाय, जो एक पारंपरिक और जनजातीय समूह है, आज के आर्थिक बदलावों में पिछड़ता जा रहा है। कभी यह समुदाय अपने पारंपरिक रोजगार जैसे - शिकार, वनोपज संग्रहण, और हस्तशिल्प से अपनी जीविका चलाता था, किंतु अब ये गतिविधियाँ या तो बंद हो गई हैं या उन्हें जबरन बंद करना पड़ा है। आज बिरहोर समुदाय के लोग अस्थायी मजदूरी या दिहाड़ी कार्य तक सीमित हो गए हैं, जिससे उनकी आर्थिक असुरक्षा और बढ़ी है। राज्य और केंद्र सरकारें बिरहोर समुदाय की आर्थिक समृद्धि व सशक्तिकरण को लेकर प्रयासरत हैं। कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती इन योजनाओं

का सही ढंग से क्रियान्वयन और वास्तविक लाभार्थियों तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करना है। योजनाओं का केवल कागजी क्रियान्वयन, अधिकारियों की उदासीनता और जागरूकता की कमी के कारण ये प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पा रहे हैं। इससे विकास की प्रक्रिया में असमानता बनी रहती है और बिरहोर जैसे समुदाय दोहरी मार झेलते हैं - एक तरफ गरीबी और दूसरी तरफ उपेक्षा। इस स्थिति में समाधान यही है कि स्थानीय संसाधनों पर आधारित रोजगार के स्थायी और समुदाय केंद्रित विकल्प विकसित किए जाएँ। उदाहरणस्वरूप – वनोपज आधारित उद्योग, कुटीर एवं लघु उद्योग, कौशल विकास प्रशिक्षण, और समुदाय आधारित सहकारी समितियाँ। जब तक बिरहोर समुदाय को उनकी पारंपरिक दक्षताओं के साथ नए युग के रोजगार से जोड़ा नहीं जाएगा, तब तक उनकी आर्थिक समृद्धि और आत्मनिर्भरता केवल एक सपना ही बनी रहेगी। योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन, निगरानी और समुदाय की सक्रिय भागीदारी ही इनके समग्र विकास की कुंजी है।

संदर्भ सूची

1. ऑफिस ऑफ द रजिस्ट्रार जनरल एंड सेंसस कमिश्नर, इंडिया. (2011). पॉपुलेशन सेंसस 2011. टेबल ए-11 एपेंडिक्स: डिस्ट्रिक्ट वाइज शेड्यूल्ड ट्राइब पॉपुलेशन (एपेंडिक्स), झारखंड - 2011.
2. आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,रायपूर ,2020. बिरहोर एक विशेष पिछड़ी जनजाति ,पृष्ठ -4
3. प्रेमी, जे.के. (2014). बिरहोर: द इन्कॉन्सिक्वेंशियल एक्स्ट्राऑर्डिनरी प्रिमिटिव ट्राइबल ग्रुप (PTG) ऑफ इंडिया. रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज, 5(4), 366-369.
4. प्रकाश, डी.के.ओ. (2022). चैलेंजेज फेस्ड बाय पार्टिकुलरली वल्नरेबल ट्राइबल ग्रुप्स ऑफ झारखंड. डेमोक्रेसी इन इंडिया, रेड'शाइन पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड. हेडक्वार्टर्स (इंडिया): 88, पटेल स्ट्रीट, नवमुवाडा, लुनावाडा, इंडिया-3, 45-54.
5. लकड़ा, ई.जे., और कुमार, एस. (2017). प्रेडिकामेंट ऑफ हंगर, पॉवर्टी एंड फूड सिक्योरिटी अमंग द PVTGs ऑफ झारखंड. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 22(7, 5), 08-12.
6. आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,रायपूर ,2020. बिरहोर एक विशेष पिछड़ी जनजाति ,पृष्ठ -4
7. कुमार, आर. (2017a). एजुकेशनल डेवलपमेंट अमंग प्रिमिटिव ट्राइब्स इन झारखंड: अ ज्योग्राफिकल स्टडी ऑफ बिरहोर. इंडियन जर्नल ऑफ दलित एंड ट्राइबल स्टडीज, 5(2), 195-203.
8. कुमार, आर. (2017b). एक्सक्लूजन इन एजुकेशन एंड इश्यूज ऑफ चैलेंजेज ऑफ डेवलपमेंट ऑफ ट्राइब्स इन झारखंड: अ स्टडी. इंडियन जर्नल ऑफ दलित एंड ट्राइबल स्टडीज, 5(1), 100-112. ISSN 2348-1757.
9. बंद्योपाध्याय, एस. (2015). डायनामिक्स ऑफ ट्राइबल इकॉनमी: अ स्टडी ऑन अ प्रिमिटिव ट्राइबल ग्रुप (बिरहोर) ऑफ वेस्ट बंगाल. बिजनेस स्पेक्ट्रम, 5(2), 10-24.
10. नागवंशी, आर., और कुमार, ए. (2025). ट्रेडिशनल इकोनॉमिक प्रैक्टिसेज ऑफ बिरहोर ट्राइब ऑफ छत्तीसगढ़ एंड इट्स रिलेवेंस फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट. शोधसमाजिक: जर्नल ऑफ सोशल स्टडीज, 2(2), 1-11.
11. कुमार, जी., दिलीप, सी.एल., सेठी, ए.के., और गुप्ता, बी. (2019). द बिरहोर ट्राइब्स ऑफ रामगढ़ डिस्ट्रिक्ट, झारखंड - अ फेरेट इन्टू देयर ओरल हेल्थ स्टेटस एंड ट्रीटमेंट नीड्स. मेडिसिन एंड फार्मेसी रिपोर्ट्स, 92(2), 178.
12. कुमार, जे., और कुमार, आर.के. (2017). असेसमेंट ऑफ डेवलपमेंट प्लान एंड प्रोटेक्शन फॉर बिरहोर कम्युनिटी ऑफ दुरू कसमार विलेज, मांडू, झारखंड. IOSR जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, 22(5), 77-82.
13. कृति, सी. (2017). ओप्रेशन ऑन द बिरहोर ट्राइब इन झारखंड, इंडिया: अ केस स्टडी. इन प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन सोशल साइंसेज (वॉल्यूम 4, नंबर 1, पीपी. 11-17).
14. सिंह, पी.के. (2010). इकोलॉजी, इकॉनमी एंड रिलीजन इन ट्राइबल झारखंड: अ सर्च इन्टू कॉन्ग्रुएंट-टाइपोलॉजी. द ओरिएंटल एंथ्रोपोलॉजिस्ट, 10(2), 139-154.
15. भारती, डी., और झा, जी.एन. (2019). चैलेंजेज ऑफ हेल्थ केयर एंड सैनिटेशन अमंग द बिरहोर ऑफ हजारीबाग, झारखंड. एंथ्रोपोलॉजी इन पब्लिक हेल्थ, 30.

****